महाकवि बाणभट्ट
विरचित कादम्बरी (शुकनाशोपदेश)

PMKVY
PRADHAN MANTRI KAUSHAL VIKAS YOJANA

बाणभट्ट – सामान्य परिचय

कुबेर – के चार पुत्र
↓ अच्युत, ईशान, हर, एवं
पशुपति (सबसे छोटे पुत्र)
↓ (चित्रभानु आदि 11 पुत्र जिसमें
अर्थपति (4वें) → चित्रभानु (4वें पुत्र थे)
↓
बाणभट्ट
↓
भूषणभट्ट (पुलिन्दभट्ट)

वात्स्यायन गोत्र
बिहार के सोननद पर प्रीतिकूट नामक गाँव

⇒ श्रीहर्ष के (606-648) राज कवि

समय ⇒ ~~6वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध~~
7वीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध

कृतियाँ

1. हर्षचरित (आख्यायिका) आठ उच्छ्वास प्रथम 3 में स्वयं का जीवन परिचय
2. कादम्बरी – पूर्वार्द्ध, उत्तरार्द्ध – आठ उच्छ्वास ⇒ कथा ग्रन्थ
3. मुकुटताडित

(6) (4) चण्डीशतक

नायक – शूद्रक – चन्द्रापीड – चन्द्रमा
नायिका – कादम्बरी
नायिका की सखी – महाश्वेता
कादम्बरी नायक का सखा – वैशम्पायन

⇒ 3 जन्मों की कथा

⇒ शूद्रक → चन्द्रापीड → चन्द्रमा

शुक → ~~पुण्डरीक~~ वैशम्पायन → पुण्डरीक

माता लक्ष्मी

चाण्डालकन्या

⇒ चन्द्रापीड के माता का नाम विलासवती थी
चन्द्रापीड के पिता का नाम तारापीड था

⇒ चन्द्रापीड के पिता तारापीड का मंत्री
शुकनास था

⇒ शुकनास ने युवराज चन्द्रापीड के राजपद ग्रहण करते समय उपदेश दिया था

पुण्डरीक का मिलन महाश्वेता से होता है
चन्द्रापीड का मिलन कादम्बरी से होता है।

⇒ शुकनास ने लक्ष्मी का वर्णन विस्तृत रूप से किया है।

- बाणभट्ट की गद्यशैली — पाञ्चाली
- बाणभट्ट परिसंख्या अलंकार के सिद्धहस्त कवि थे।

PMKVY
PRADHAN MANTRI KAUSHAL VIKAS YOJANA

गोवर्धनाचार्य ने बाणभट्ट के लिए

जाता शिखण्डिनी प्राग् यथा शिखण्डी तथाऽवगच्छामि। प्रागल्भ्यमधिकमाप्तुं वाणी बाणो बभूवेति।

धर्मदास ने बाणभट्ट के लिए कहा है

रुचिर-स्वर-वर्णपदा रसभाववती जगन्मनो हरति। सा किं तरुणी? नहि नहि वाणी बाणस्य मधुरशीलस्य।

- कादम्बरी की उपजीव्यता का श्रेय वृहत्कथा को है।
- शुकनाश की पत्नी का नाम मनोरमा था तथा उसका पुत्र वैशम्पायन था।
- अच्छोद सरोवर का वर्णन है।
- ताम्बूलवाहिनी पत्रलेखा कादम्बरी के प्रेम का संदेश लाती है। यहीं पूर्वार्द्ध भाग का अवसान होता है।
- महाश्वेता ने क्रुद्ध होकर वैशम्पायन को शुक बनने का शाप दिया था।

Scanned with OKEN Scanner